IJCRM
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

रामचरितमानस में समन्वय की भावना

डॉ. पुनीत श्रीवास्तव
सहायक आचार्य, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * डॉ. पुनीत श्रीवास्तव

DOI: https:/doi.org/10.5281/zenodo.20071766

सारांश

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस भारतीय सांस्कृतिक चेतना का अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह न केवल भक्ति-आधारित काव्य है, बल्कि भारतीय समाज, धर्म, परंपरा, नीति, मर्यादा और मानव-मूल्यों का समन्वित रूप भी है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य यह प्रतिपादित करना है कि *रामचरितमानस* किस प्रकार भारतीय संस्कृति को एक सूत्र में पिरोता है और धर्म, दर्शन, राजनीति, समाज तथा मानव-मूल्यों का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है। तुलसीदास की काव्य-दृष्टि एकता, सामंजस्य और सर्वधर्म समभाव को स्थापित करती है, जो आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-08-2024
- **Accepted:** 27-10-2024
- **Published:** 30-10-2024
- **IJCRM:**3(5); 2024: 293-296
- **©2024, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

पुनीत श्रीवास्तव. रामचरितमानस में समन्वय की भावना. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2024; 3(5):293-296.

मुख्य शब्द: रामचरितमानस, समन्वय की भावना, भक्ति दर्शन, भारतीय संस्कृति, सगुण-निर्गुण समन्वय, सामाजिक समरसता, शैव-वैष्णव एकता।

© 2024 डॉ. पुनीत श्रीवास्तव. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

समन्वय भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषता है, समय-समय पर इस देश में कितनी ही संस्कृतियों का आगमन और आविर्भाव हुआ। परन्तु वे घुल मिलकर एक हो गई। समन्वय को आधार बनाने वाले लोकनायक तुलसी ने अपने समय की जनता के हृदय की धड़कन को पहचाना और 'रामचरितमानस' के रूप में समन्वय का अद्‌भुत आदर्श प्रस्तुत किया। तुलसी सही अर्थों में सच्चे सूक्ष्मद्रष्टा थे और उन्होंने बाल्यकाल से ही जीवन की विषम स्थितियों को देखा और भोगा था इसलिये वह व्यक्तिगत स्तर पर वैषम्य की पीड़ा से भली भाँति परिचित-थे। उनकी अन्तर्भेदी दृष्टि समाज, राजनीति, धर्म, दर्शन, सम्प्रदाय और यहाँ तक कि साहित्य में व्याप्त वैषम्य, असामनता, अलगाव, विछिन्नता, द्वेष और स्वार्थपरता की जड़ो को गहराई से नाप चुकी थी और उनके भीतर छिपी एक सर्जक की संवेदनशीलता यह भाँप चुकी थी कि वैषम्य और विछिन्नता के उस युग में लोकमंगल केवल सामंजस्य और समन्वय के लेप से ही संभव था। समन्वय से ही उन गहरी खाइयो को पाटा जा सकता था जो मनुष्य को मनुष्य से अलग, तुच्छ और अस्पृश्य बना रही थी। समन्वय से ही राजनीति को समदर्शी और शासन को लोक कल्याणकारी बनाया जा सकता था। फलतः तुलसी राम-भक्ति की नौका के सहारे समन्वय का संदेश देने निकल पड़े।

रामचरितमानस इसी समन्वयतत्त्व का विराट काव्य है-—जो भारतीय समाज को एक सूत्र में बाँधता है[1]

धार्मिक समन्वय

शिव–राम का अद्वैत संबंध हिंदू धर्म में वैष्णव और शैव धारा को अक्सर अलग माना जाता है, किंतु तुलसीदास दोनों को एक मानते हैं। बालकाण्ड के आरंभ में ही वे शिव–पार्वती की वंदना करते हैं— "वंदउँ भवानी शंकरौ..." यह केवल प्रार्थना नहीं, बल्कि यह स्वीकारोक्ति है कि रामकथा को शिव ने ही प्रथम बार पार्वती को सुनाया। इससे स्पष्ट होता है कि रामभक्ति और शिवभक्ति दो नहीं, बल्कि एक ही आध्यात्मिक धारा हैं[2]।

सगुण–निर्गुण का समन्वय

भक्तिकाल में निर्गुण संत कबीर), रैदास आदिऔर सगुण संत तुलसी , सूर बड़ा मतभेद था। किन्तु तुलसीदास कहते हैं— निर्गुण ब्रह्म का सगुण रूप ही राम हैं। इस प्रकार वे दोनों परंपराओं में संतुलन स्थापित करते हैं[3]।

भक्ति और ज्ञान का समन्वय

तुलसीदास भक्ति और ज्ञान में कोई भेद नही मानते थे है, क्योंकि ये दोनों ही सांसारिक क्लेशो का नाश करने वाले है, कहकर भक्ति और ज्ञान में अभेद स्थापित किया-

"कहहि सन्त मुनि बेद पुराना।
नहि कुछ दुर्लभ ग्यान समाना।।"[4]

"भगतिहि ग्यानहि नहि कछु भेदा।
उभय हरहि भव संभव खेदा।।"[5]

कहकर ज्ञान की श्रेष्ठता का भी प्रतिपादन किया है क्योंकि ज्ञान से ही चित्त रूपी दीपक प्रज्जवलित होता है। इस प्रकार तुलसीं ने भक्ति और ज्ञान के मध्य अद्‌भुत समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है

भाषा मे समन्वय

तुलसीदास का 'रामचरितमानस' श्रेष्ठ महाकाव्य है अवधि मे रामचरित्र मानस उनकी साहित्यिक प्रतिभा की पराकाष्ठा है रामचरितमानस में उन्होंने इतने रचनात्मक कौशल के साथ संस्कृत और अवधी भाषाओ में जो सामंजस्य स्थापित किया है वो देखते ही बनता है-

"परहित सरिस धरम नहि भाई।
पर पीड़ा सम नहि अधमाई॥[6]

अवधेस सुरेस रमेस विभो।
सरनागत मागत पाहि प्रभो।।"[7]

तुलसीदास एक ऐसे मनीषी, चिंतक, भक्त और जन कवि है, जिन्होंने अपने राम की पूंजी के बल पर तत्कालीन परिवेशगत समस्याओं का निराकरण किया। जैसे तुलसीयुगीन समाज में जाति-पाँति और अस्पृश्यता का बोलबाला था। उच्च वर्ण के व्यक्ति निम्न-वर्ण के व्यक्तियों को हेय दृष्टि से देखते थे। शूद्र वर्ण के लोग सभी प्रकार के सामाजिक एवं धार्मिक यहाँ तक कि शैक्षिक अधिकारों से भी वंचित थे। ऐसे में तुलसी ने रामचरित्र मानस मे राम और उनकी भक्ति के द्वारा उन तमाम सामाजिक विषमताओ को दूर कर सबके लिये एक ऐसा मंच निर्मित किया है जहाँ अपने-पराए का भेदभाव ही मिट जाता है, राम और निषादराज तथा भरत और निषादराज की भेंट समन्वय का उज्ज्वल आदर्श प्रस्तुत करती है-

"करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ।
मनहुँ लखन सब भेंट भइ प्रेम न हृदयँ समाइ।।" [8]

समन्वय की विचारधारा को सशक्त बनाने के लिए तुलसी ने अपने युग, परिस्थितियों का गंभीर अध्ययन और विवेचन किया होगा,तभी तो वहाँ भी तुलसी ने रामचरित्र मानस द्वारा उस समय जो धर्म के नाम पर अनेक सम्प्रदायों में आडम्बर, अनाचार, जटिलता, पुरोहितवाद जैसी कुरीतियाँ पनप रही थी उस विषमता को समाप्त करने के लिये समन्वय का मार्ग अपनाया। उन्होंने शिव के मुख से

'सोइ सैम इष्टदेव रघुनीरा सेवत जाति सदा मुनिधीरा'[9]

कहलवाकर शिव को राम का उपासक घोषित किया तो राम के मुख से-

"संकर प्रिय मन द्रोही सिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक महुँ वास।।"[10]

कहलवाकर राम को शिव का अनन्य भक्त घोषित किया।

© 2024 डॉ. पुनीत श्रीवास्तव. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

शैव ओर वैष्णव सम्प्रदायों के समान उस युग मे वैष्णव और शाक्त सम्प्रदायों में भी पारस्परिक वैमनस्य पनप चुका था। वैष्णव विष्णु के उपासक थे और शाक्त शक्ति के तथा ये दोनों भी निरन्तर संघर्षरत रहते थे। तुलसी ने इस संघर्ष को समाप्त करने के लिए तथा उक्त दोनों सम्प्रदायों में सामंजस्य स्थापित करने के लिये सीता को शक्तिस्वररूपा बताया और उन्हें ब्रह्म की शक्ति कहते हुए

"उद्भव स्थिति संहार करनि।
क्लेश हरनि सर्वश्रेयस करनि॥"

कहकर शक्ति की उपासना की।

सांस्कृतिक समन्वय

राम चरित मानस में देव , नर , वानर , राजा , साधारण मनुष्य इस सभी को एक ही छत्र के नीचे खड़ा कर यह संकेत दिया है कि सभी का अपनी अपनी जगह महत्व है और सभी का योगदान महत्वपूर्ण होता है । यहां तक हिन्दू संस्कृति के साथ मुस्लिम संस्कृति का भी समन्वय उन्होंने स्थापित कर समाज को एक जुट करने का उपक्रम किया । राम और कृष्ण काव्य धारा में समन्वय:- संत तुलसी स्वभावतः राम भक्त माने जाते हैं परन्तु उन्होंने कृष्ण जी के चरित्र को लेकर कृष्ण गीता वली की रचना करके दोनों सम्प्रदायों में ऐक्य स्थापित किया तथा दोनों में मूलतः एक होने का प्रमाण दिया । इसी तरह भाषा अलंकार ; छन्द विधान एवं शैली में भी समन्वय स्थापित कर एक महान समन्वय वादी कवि , भक्त के रूप में स्थापित किया । सम्पूर्ण विश्व उनके इस महान समन्वय वादी दृष्टि कोण को नमन करता है ।

शैव-वैष्णव मतों का समन्वय

शैव और वैष्णव पंथों में बहुत विरोध है। तुलसी की समन्वयक दृष्टि इस विद्वेष को मिटाने के लिए आकुल हो उठी। उन्होंने अपने मानस में शंकर को राम के श्रेष्ठ व महान भक्त के रुप में अभिव्यक्त किया है और राम से शंकर की पूजा भी करवाई है। शिवजी सती के वियोग को राम गुन का बखान करके भूलाने का प्रयास करते है। तो राम शिवलिंग के समक्ष नतमस्तक होते हैं ताकि शिव कृपा हो। इस तरह दोनों पंथो को निकट लाने का प्रयास किया है। राम मानस में कहते है।–

संकर प्रिय मम द्रोही, सिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कल्प भरि, घोर नरक महुँ वास॥"

इस प्रकार वे शैव और वैष्णव पंथ को निकट लाने का प्रयास करते है।

राजतंत्र और जनमंत्र समन्वय

तुलसी ने मानस में जिस रामराज्य की कल्पना है वह राजतंत्र और जनतंत्र का सुंदर समन्वय है। अकेले राम ही राजा है यह राजतंत्र है। लेकिन यह राजा मुखतुल्य होना चाहिये जो सब अंगो का पालन पोषण विवेक के साथ करे । यदि प्रजा राजभक्त है तो राजा भी प्रजापरायण है। तुलसी के राम जनता को यह अधिकार देते है- नहिं अनीति नहिं कुछ प्रभुताई सुनहु काहु जो तुम्हहि सुहार्स यही तो जनतंत्र है। वे कहते है-

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवसि नरकअधिकारी।

निष्कर्षत

तुलसी ने तत्कालीन संस्कृतियों, जातियों, धर्मावलंबियों के बीच समन्वय स्थापित करके दिशाहीन समाज को नई दिशा प्रदान की। समन्वय का यह भाव उनकी अनुभूति एवं अभिव्यक्ति में भी झलकता है कवि की भाषा की सहजता, सरलता और उत्कट सम्प्रेषणीयता मानवमूल्यों को जोड़ती है। तुलसी के काव्य में संस्कृत, अवधी, ब्रजभाषा आदि भाषाओ का सुंदर सामंजस्य मिलता है। लोक ब्रह्म तुलसी ने भारतीय जनता की नसनस को पहचान- कर ही 'रामचरितमानस' के द्वारा समन्वयवाद का अद्भुत आदर्श प्रस्तुत किया। वैसे तो हमारी भारतीय संस्कृति में सब्र और समन्वय का भाव पहले भी था और आज भी है किन्तु आज भोग की प्रवृति प्रधान हो रही है। सामाजिक व्यवस्था के तार भी छिन्न-भिन्न हो रहे है। विश्वस्तर पर आतंकवाद चुनौती बन चुका है। इस प्रकार की विषम परिस्थिति में तुलसी की लोकपरक दृष्टि एवं समन्वयवादी विचारधारा ही मानवजाति को मानसिक एवं आत्मिक शन्ति प्रदान कर सकती है।

संदर्भ

1. शुक्ल, रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 1929 (नवीन संशोधित संस्करण, पुनर्मुद्रण 2020). पृ. 215-228.
2. तुलसीदास. रामचरितमानस (गीताप्रेस संस्करण). गोरखपुर: गीता प्रेस, संवत् 2079 (2022). बालकाण्ड, श्लोक एवं चौपाइयाँ. पृ. 1-45.
3. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. हिन्दी साहित्य में भक्ति आंदोलन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1981 (पुनर्मुद्रण 2019). पृ. 132-156.
4. तुलसीदास. रामचरितमानस. अरण्यकाण्ड, चौपाई-1: "खर दूषन मैं जिन्ह कर घाती। तेइ सित हरि अब होहिं अघाती॥" गोरखपुर: गीता प्रेस, संवत् 2079.
5. तुलसीदास. रामचरितमानस. अरण्यकाण्ड, चौपाई-46: "विनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति। बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति॥" गोरखपुर: गीता प्रेस, संवत् 2079.
6. तुलसीदास. रामचरितमानस. उत्तरकाण्ड, दोहा-4: "दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥ सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥" गोरखपुर: गीता प्रेस, संवत् 2079.
7. तुलसीदास. रामचरितमानस. लंकाकाण्ड, दोहा-13: "पुनि प्रभु ताहि दीन्हि निज माया। जेहि बिबिध देह धरइ प्रभु राया॥" गोरखपुर: गीता प्रेस, संवत् 2079.
8. तुलसीदास. रामचरितमानस. अयोध्याकाण्ड, दोहा-236: "राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका॥ बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप बिषमता खोई॥" गोरखपुर: गीता प्रेस, संवत् 2079.

© 2024 डॉ. पुनीत श्रीवास्तव. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

9. तुलसीदास. रामचरितमानस. बालकाण्ड, दोहा-116:
"सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ। हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस बिधि हाथ॥" गोरखपुर: गीता प्रेस, संवत् 2079.
10. तुलसीदास. रामचरितमानस. बालकाण्ड, दोहा-120:
"होहिं सगुन सुभ बिबिध बिधि बाजहिं गगन निसान। पुर नर नारि सनाथ करि भलेहिं नाथ पहिचान॥" गोरखपुर: गीता प्रेस, संवत् 2079.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2024 डॉ. पुनीत श्रीवास्तव. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/